"बी० एड० और डी० एल० एड० विद्यार्थियों का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन"

(A study of B.Ed and D.El.Ed students' Attitude towards teaching)

Dr. Prashobh P. D'Souza,
Assistant professor
SHUATS
Gopal Jee Gupta , Research Scholar, Allahabad School Of Education SHUATS.

शोध-सार (Abstract)

शिक्षण एक ऐसी गतिशील प्रक्रिया है जिसकी गतिशीलता बनाये रखने के लिए अनुकूल दृष्टिकोण और विशिष्ट प्रयास और चेष्टा की आवश्यकता है,वर्तमान अध्ययन बी० एड० और डी० एल० एड० विद्यार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का पता लगाने के लिए आयोजित किया गया। इसमें बी० एड० और डी० एल० एड० के कुल 100 शिक्षक-प्रशिक्षुओं को न्यायदर्श के तौर पर लिया गया जिसमे 50 विद्यार्थियों का एक नमूना शान्ति रमेश चन्द्र महाविद्यालय बेन्दों करछना से और दुसरा बी० एड० के 50 विद्यार्थियों का नमूना इविंग क्रिस्चियन कॉलेज प्रयागराज से लिया गया है । आंकड़ों के संकलन के लिए एस० पी० अहलुवालिया की शिक्षण अभिवृत्ति परिसूची का प्रयोग किया गया जो की एक विश्वसनीय और वैध उपकरण है। आंकड़ो के विश्लेषण के लिए प्रतिशत , माध्यमान, प्रमाप विचलन, टी- टेस्ट आदि सांख्यकीय विधियों का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष से पता चला कि बी० एड० और डी० एल० एड० विद्यार्थियों में शिक्षण अभिवृत्ति में कोई अंतर नहीं है।

□□□□□□□□□□ (Introduction)

शिक्षक के व्यवहार और व्यक्तित्व आदि का छात्रों पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता हैशिक्षक का कर्तव्य कुछ ख़ास विषयों का ज्ञान प्रदान करना ही नही है अपितु छात्रों के सर्वागीण विकास में उनको समुचित दृष्टिकोण पैदा करने में सबसे अधिक महत्व शिक्षक के द्वारा अपना निजी उदाहरण प्रस्तुत किये जाने का है।

अभिवृत्तियां भी व्यक्ति के मानसिक व सामाजिक व्यवहारों को दिशा प्रदान करती है । किसी विचार वस्तु या धारणा के प्रति जैसी अभिवृत्तियां होगी व्यक्ति उसके प्रति वैसा ही व्यवहार करेगा , अभिवृत्तियां स्थायी नहीं होती वरन वह परिवेश के अनुसार बदलती रहती है। यदि व्यक्ति के बाह्य वातावरण में परिवर्तन होता है , तो उसकी अभिवृत्तियां धीरे-धीरे परिवर्तित होती जाएगी । इसके लिए शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्तियां

परिवर्तित हो रही है , जिससे वे अपने शिक्षण व्यवसाय के प्रति उचित मार्गदर्शन नही कर पा रहे हैं और इस कारन उन्हें अनेक कठिनाईयों का सामना करना पद रहा है।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन(Review Of Literature)

त्रिवेदी, रोहिणी पी० (2012) का शोध विषय " ए स्टडी ऑफ़ एटिट्यूड ऑफ़ टीचर्स टुवर्ड्स टीचिंग प्रोफेशन टीचिंग एट डिफरेंट लेवल" था। । परिणाम के तौर पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए – प्राथमिक,सेकेंडरी,और हायर सेकेंडरी और कॉलेज शिक्षको में सभी का दृष्टिकोण शिक्षण पेशे की ओर उच्च था। माध्यमिक स्टार के शिक्षकों का दृष्टिकोण अन्य स्तर के शिक्षको की अपेक्षा अधिक स्थिर और भरोसेमंद था। माध्यमिक शिक्षकों के बाद प्राथमिक शिक्षकों का दृष्टिकोण अधिक उच्च है। प्राथमिक और कॉलेज के शिक्षकों का शिक्षण पेशे के प्रति दृष्टिकोण पर परिवर्तनीय प्रभाव नही है। माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षकों का शिक्षण पेशे की ओर दृष्टिकोण पर कोई प्रभाव नही है।

भार्गव,अनुपमा और पैथी , एम० के० (2014) का शोध विषय "एटिट्यूड ऑफ़ स्टूडेंट्स टुवर्ड्स टीचिंग प्रोफेशन" था, इन्होने अपने अध्ययन में 100 बी० एड० विद्यार्थियों को शामिल किया और यह निष्कर्ष पाया कि –गैर–आदिवासी महिला पुरुषों के शिक्षण अभिवृत्ति में कोई अंतर नही है , दूसरा सामाजिक विज्ञान व्यवसाय के गैर– आदिवासी महिला पुरुषों की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई अंतर नही है। जबकि विज्ञान विषय के बी० एड० महिला और पुरुष विद्यार्थियों में अंतर देखा गया।

मट्टू, मोहम्मद इकबाल एवं बिचू, तारिक अब्दुल्लाह (2014) का शोध विषय "एटिट्यूड ऑफ़ सेकेंडरी स्कूल टीचर्स टुवर्ड्स टीचिंग विथ स्पेशल रेफ़रेन्स टू रूरल एंड अर्बन बैकग्राउंड" था। जो निष्कर्ष प्राप्त हुए, उससे पता चला कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापकों के शिक्षण पेशे के प्रति अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण अंतर है, साथ ही यह भी निष्कर्ष निकला कि– ग्रामीण और शहरी शिक्षक यथार्थवादी प्रतीत होते है और उनका विश्वास है कि सुधार और संशोधन शिक्षण पेशे का सबसे अच्छा हिस्सा है।

शोध की आवश्यकता (Need And Justification)

प्रस्तुत शोध विषय पर अनेकों अध्ययन हुए है परन्तु बी० एड० और डी० एल० एड० पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति से सम्बंधित पर्याप्त शोध नही हुए है कि वह भविष्य में अपने व्यवसाय को कितना महत्व देंगे

और वर्तमान में अपने व्यवसाय को लेकर कितना गंभीर है और कितनी लगन और पूर्ण मनोयोग से अपने शिक्षण व्यवसाय को अपनाएंगे और अपने व्यवसाय के प्रति सम्मान का दृष्टिकोण रखते हुए अपने कार्य से संतुष्टि प्राप्त करेंगे। इन सभी उपर्युक्त कारणों को समझते हुए शोधकर्ता ने शिक्षण व्यवसाय की अभिवृत्ति के प्रति शोध करने की आवश्यकता महसूस की है, जिससे कि बी० एड० और डी० एल० एड० दोनों ही पाठ्यक्रम के छात्रों की शिक्षण व्यवसाय अभिवृत्ति को पूर्ण रूप से जाना जा सके।

शोध कार्य के उद्देश्य (Objective of the Study)

- ❖ शिक्षण व्यवसाय के प्रति बी० एड० विद्यार्थिओं की अभिवृत्ति का अध्ययन।
- ❖ शिक्षण व्यवसाय के प्रति बी० एड० विद्यार्थिओं की अभिवृत्ति का अध्ययन।

शोध कार्य की परिकल्पना (Hypotheses)

- ❖ शिक्षण व्यवसाय के प्रति बी० एड० विद्यार्थिओं की अभिवृत्ति सकारात्मक होगी ।
- ❖ शिक्षण व्यवसाय के प्रति बी० एड० विद्यार्थिओं की अभिवृत्ति सकारात्मक होगी ।

प्रतिदर्श (Sample)

प्रस्तुत शोध में न्यायदर्श के चयन के लिए यादृच्छिक नमूना विधि का प्रयोग किया गया और प्रयागराज के बी० एड० और डी० एल० एड० के कुल 100 शिक्षक-प्रशिक्षुओं को न्यायदर्श के तौर पर लिया गया जिसमे 50 विद्यार्थियों का एक नमूना शान्ति रमेश चन्द्र महाविद्यालय बेन्दों करछना से और दुसरा बी० एड० के 50 विद्यार्थियों का नमूना इविंग क्रिस्चियन कॉलेज प्रयागराज से लिया गया है

शोधकार्य विधि (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

उपकरण (Tool Used)

प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के संकलन के लिए एस० पी० अहलुवालिया की शिक्षण अभिवृत्ति परिसूची का प्रयोग किया गया जो की एक विश्वसनीय और वैध उपकरण है।

विश्लेषण और व्याख्या (Analysis And Interpretation)

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत विवेचना एवं निष्कर्ष परिकल्पनाओं के आधार पर किया गया है –

- H_1 शिक्षण व्यवसाय के प्रति बी० एड० विद्यार्थिओं की अभिवृत्ति का अध्ययन।
- H_{01} : शिक्षण व्यवसाय के प्रति बी० एड० विद्यार्थिओं की अभिवृत्ति सकारात्मक होगी ।

क्रम स.	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी-मान	सारणी मूल्य
1.	छात्र	25	251.68	22.02	8.79	t= 2.68 at 0.01 level
2.	छात्राएं	25	238.84	12.26		

उपयुक्त सारणी से स्पष्ट है की बी० एड० महिला मध्यमान (251.68) तथा बी० एड० पुरुष मध्यमान (238.84) है तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति बी० एड० के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति के टी का परिगणित मान 8.79 मुक्तांश 48 के लिए टी के सारणी मान 2.68 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है अर्थात सार्थक अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। बी० एड० महिला और बी० एड० पुरुष छात्रों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सकारात्मक अंतर है क्यूंकि यहाँ पुरुषों की स्थिति बेहतर है क्यूंकि वह प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त ही व्यवसाय की ओर रुख करने लगते है जो किअपेक्षाकृत महिलाओं में कम ही देखा जाता है क्यूंकि उनके साथ उनके परिवार का दायित्व भी होता है।

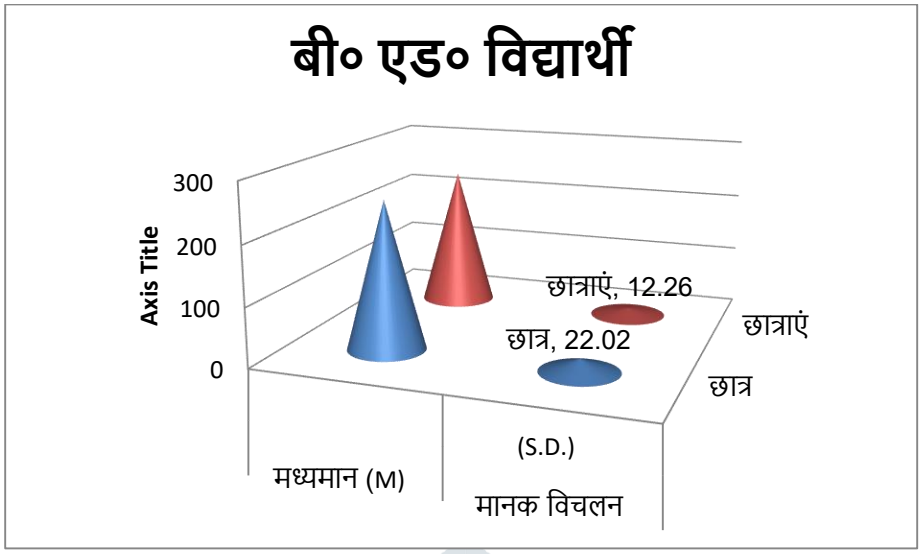

आरेख चित्र

बी० एड० विद्यार्थियों का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान (M) , प्रमाप विचलन (S.D.) का आरेख चित्र।

H_2 : शिक्षण व्यवसाय के प्रति डी० एल० एड० विद्यार्थिओं की अभिवृत्ति का अध्ययन।

H_{02} : शिक्षण व्यवसाय के प्रति डी० एल० एड० विद्यार्थिओं की अभिवृत्ति सकारात्मक होगी।

क्रम स.	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी-मान	सारणी मूल्य
1.	छात्र	25	246.04	23.25	0.48	t= 2.68 at 0.01 level
2.	छात्राएं	25	246.12	16.61		

उपयुक्त सारणी से स्पष्ट है की डी० एल० एड० महिला मध्यमान (246.04) तथा डी० एल० एड० पुरुष मध्यमान (246.12) है तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति डी० एल० एड० के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति के टी का परिगणित मान 0.48 मुक्तांश 48 के लिए टी के सारणी मान 2.68 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक नही है, अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। डी० एल० एड० महिला और डी० एल० एड० पुरुष छात्रों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नही है।

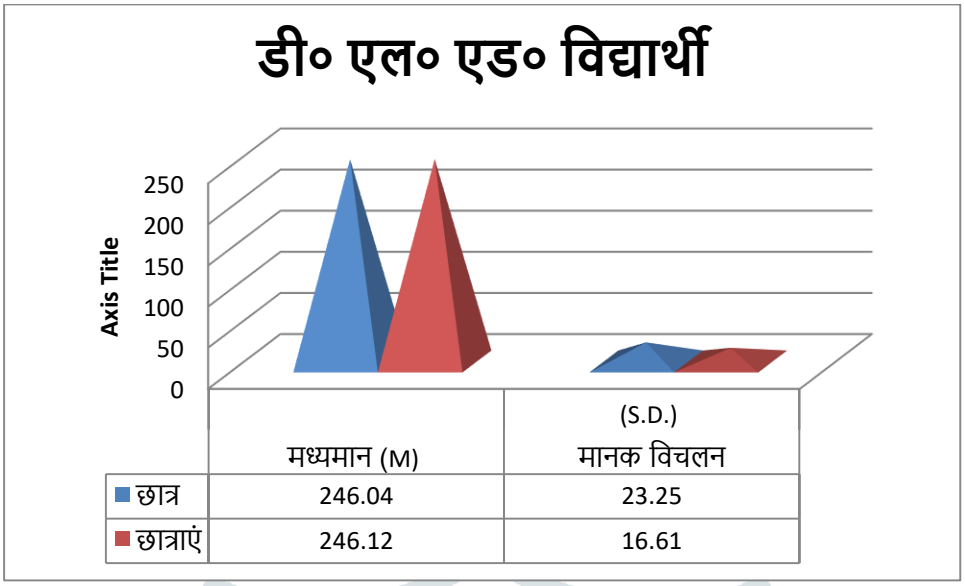

आरेख चित्र

डी० एल० एड० विद्यार्थियों का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान (M) , प्रमाप विचलन (S.D.) का आरेख चित्र।

निष्कर्ष एवं सुझाव (Conclusion And suggestion)

निष्कर्ष के रूप में कह सकते है कि-

- बी० एड० महिला और बी० एड० पुरुष छात्रों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सकारात्मक अंतर है क्यूंकि यहाँ पुरुषों की स्थिति बेहतर है क्यूंकि वह प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त ही व्यवसाय की ओर रुख करने लगते है जो किअपेक्षाकृत महिलाओं में कम ही देखा जाता है क्यूंकि उनके साथ उनके परिवार का दायित्व भी होता है।
- डी० एल० एड० महिला और डी० एल० एड० पुरुष छात्रों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नही है।

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि पुरुष अध्यापकों में छात्रों को अनुशासन में रखने की क्षमता अधिक होती है जिससे कक्षा शिक्षण अधिक प्रभावशाली हो जाता है। पारिवारिक दायित्वे भी महिलाओं के ऊपर अधिक होते है अतः परिवार तथा नौकरी दोनों का भार वहन करना पड़ता है फिर भी शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक है। समुदाय दृष्टिकोण ,शिक्षकों की अवधारण, शिक्षकों की कमाई एक पेशे के रूप में शिक्षण के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकती है। अतः आवश्यक है कि अध्यापक का उचित सम्मान हो तथा उन्हें उचित

सुविधाएं प्रदान की जाए जिससे छात्रों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति रूचि उत्त्पन्न हो और वो सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाए ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (References)

- **भार्गव, अनुपमा और पैथी , एम० के०** (2014) "एटिट्यूड ऑफ़ स्टूडेंट्स टुवर्ड्स टीचिंग प्रोफेशन" तुर्किश ऑनलाइन जर्नल ऑफ़ डिस्टेंस एजुकेशन –ज्व्श्रक्म श्रनसल 2014 ैप्छ 1302.6488 टवसनउमरू15 छनउइमतरू3 ंतजपबसम 3

  क्व्प्रू10ण्17718ध्जवरकमण15072 ण्पर्बतंतण्बवउ
- **मट्टू, मोहम्मद इकबाल एवं बिचू तारिक अब्दुल्लाह** (2014) **"एटिट्यूड ऑफ़ सेकेंडरी स्कूल टीचर्स टुवर्ड्स टीचिंग विथ स्पेशल रेफ़रेन्स टू रूरल एंड अर्बन बैकग्राउंड" इंडियन जर्नल ऑफ़ रिसर्च वॉल्यूम** 3 , **इशू** 2 ,2014 **आइ० एस० एस० एन०** 2250.1991 द्य
- **त्रिवेदी, रोहिणी पी०** (2012) " **ए स्टडी ऑफ़ एटिट्यूड ऑफ़ टीचर टुवर्ड्स टीचिंग प्रोफेशन टीचिंग एट डिफरेंट लेवल" इंटरनेशनल मल्टीडिसिप्लीनरी ई जर्नल, वॉल्यूम** 1, **इशू** 5 ,2012 **pp**ण 24.30 **www.shreeprakashan.com |**
- **गुप्ता**ए **एस० पी०** (2005) **"शिक्षा मनोविज्ञान**ष **शारदा पुस्तक भवन**ए **इलाहाबाद** द्य
- **शर्मा**ए **आर० ए०** (2005) **"शिक्षा तथा मनोविज्ञान में मापन एवं मूल्याकन" लॉयल बुक डिपो मेरठ**–250001द्य